उत्तर प्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों की 29वीं वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का उद्घाटन समारोह

दिनांक 10–09–2020 को भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), जोन–3, कानपुर के अन्तर्गत आने वाले उत्तर प्रदेश के 89 'कृषि विज्ञान केन्द्रों की 29वीं वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला' का उद्घाटन समारोह सरदार वल्लभभाई पटेल कृ. एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ में आयोजित किया गया। यह कार्यशाला भाकृअनुप–अटारी कानपुर एवं सरदार वल्लभभाई कृ. एवं प्रौ. विवि, मेरठ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही है। तीन दिवसीय कार्यशाला 10 से 12 सितम्बर 2022 तक चलेगी। इस कार्यशाला में उत्तर प्रदेश के समस्त 89 कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतवर्ष (2021–22) की प्रगति की समीक्षा व आगामी वर्ष (2023) की कार्ययोजना की समीक्षा की जाएगी।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि श्री सूर्य प्रताप शाही जी, माननीय मंत्री (कृषि, कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान) उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशनों का विमोचन किया गया और अभिनव किसानों और अन्य वैज्ञानिकों तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि प्रत्येक केवीके को किसानों के लिए एक मॉडल अवश्य विकसित करना चाहिए। केवीके को मल्चिंग पर ध्यान देने के साथ संसाधन संरक्षण पर बल देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक होने के नाते हमें अपनी कार्य गति तेज करनी चाहिए। हमें हर किसान को वैज्ञानिक तकनीक मुहैया करानी चाहिए। स्प्रिंकलर तथा टपक, शुष्क सिंचाई प्रणाली आदि तकनीक पर और काम करने की जरूरत है। हमें कृषि क्षेत्र में व्यावहारिक रूप से काम करना है। हर जनपद में 1–1 हेक्टेयर की नर्सरी प्रदान की जाएगी ताकि किसानों के बीच 2 करोड़ पौधे/सब्जिया की पौध बांटी जाएं। कृषि क्षेत्र को और बढ़ावा देने की जरूरत है तथा कृषि बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों को जलवायु परिवर्तन पर आधारित नई तकनीक के साथ आगे आना चाहिए और आने वाली चुनौतियों का समाधान निकालना चाहिए। आने वाला वर्ष मिलेट वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव डेयर और महानिदेशक भाकृअनुप, नई दिल्ली, ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे देश ने पिछले 75 वर्षों में कृषि में अभूतपूर्व प्रगति की है। अपनी जनसंख्या की अनाज की जरूरत पूर्ण करने के साथ ही अब हम कृषि उत्पादों को दूसरे देशों में भी निर्यात करने में सक्षम हैं। विज्ञान को समाज तक सही तरीके से पहुँचाया जाना चाहिए। कार्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है। कृषि प्रसार व केवीके विज्ञान एवं किसाना सेवा कार्य ठीक प्रकार से कर रहे हैं। आने वाले 25 वर्षों में हमें कृषि में उपज, लाभ और स्थिरता बढ़ाने की जरूरत है। प्रकृति के अनुकूल खेती और आधुनिक कृषि को मिलाकर कृषि मॉडल होना चाहिए जो उत्पादक, लाभदायक और पर्यावरण के अनुकूल हो। हमारे वैज्ञानिक नई वैरायटी लेकर आ रहे हैं और हम इन तकनीकों को और बढ़ावा देना चाहिए। केवीके जिले में मॉडल के रूप में कार्य करें, आज ऐसी जरूरत है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने अपने संबोधन में कहा कि प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना सरकार की प्राथमिकता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गेहूं की जल्दी बुवाई इस वर्ष खरीफ में कम वर्षा के कारण अत्यंत आवश्यक है। फसल का विविधीकरण महत्वपूर्ण है। भारत सरकार द्वारा 300 ड्रोन मुहैया कराए जाएंगे। ड्रोन खरीदने और ड्रोन प्रोजेक्ट में नियमों और विनियमों का ठोक से पालन करने की जरूरत है। फसल कैफेटेरिया केवीके का मुख्य अंग है और इसे प्रत्येक केवीके में अच्छी तरह से बनाए रखा जाना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि कैप्टन विकास गुप्ता, चेयरमैन, उपकार, लखनऊ और विशिष्ट अतिथि डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ ने भी कार्यशाला को संबोधित किया।

डॉ. डी.आर. सिंह, कुलपति, सरदार वल्लभभाई कृ. एवं प्रौ. विवि, मेरठ ने कहा कि प्राकृतिक खेती परियोजना के तहत केवीके प्रत्येक केवीके में 1 हेक्टेयर क्षेत्र में प्रदर्शनों को कवर करेंगे। प्रत्येक वैज्ञानिक के पास एक उत्पाद होना चाहिए। हम फूलों की खेती को बढ़ावा दे रहे हैं। पश्चिमी यूपी में हमें सब्जियों के उत्पादन को बढ़ावा देने की जरूरत है। चारे की समस्या पर काम करने की जरूरत है। हम ग्रामीण महिलाओं के लिए महिला अध्ययन केंद्र खोलने और उन्हें प्रशिक्षण प्रदान किये जाने पर प्रयास करना है।

डॉ. यू.एस. गौतम, निदेशक, भाकृअनुप–अटारी, जोन तृतीय, कानपुर ने मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथियों और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आज 13 सर्वश्रेष्ठ केवीके को पुरस्कृत किया जा रहा है। हमारे वैज्ञानिकों ने किसानों की आय दोगुनी करने की सफलता की कहानियों को सफलतापूवक एकत्र और संकलित किया है, कुल 75000 किसानों की सफलता की कहानियां प्रकाशित की गई हैं। सरकार ने 32 केवीके में ड्रोन के लिए बजट दिया है, प्राकृतिक कृषि परियोजना के लिए 52 केवीके चुने गए हैं। बेहतर कार्य प्रदर्शन हेतु केवीके और आईसीएआर संस्थानों में रिक्त पदों को भरने की आवश्यकता है।

उद्घाटन कार्यक्रम के अंत में डॉ. पी.के. सिंह, निदेशक प्रसार, सरदार वल्लभभाई कृ. एवं प्रौ. विवि, मेरठ ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया और उद्घाटन सत्र धन्यवाद के साथ समाप्त हुआ।

(स्रोतः भाकृअनुप–अटारी, जोन तृतीय, कानपुर)